Part II Hoa.
P. III

कम्बुज के आश्रम व्यवस्था

Ques. Asrama life in Kambuja.

Ans —

कम्बुज देश में मंदिरों के साथ आश्रमों व मठों की भी सत्ता थी, जिनके लिए राजाओं तथा अन्य सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा प्रभूत मात्रा में दान दिया जाता था। इन आश्रमों के सम्बन्ध में अनेकविध नियम थे, जिन्हें राजकीयआज्ञा के रूप में जारी किया गया था। राजा यशोवर्मा के प्रहयत अभिलेख (889 ई०) में यशोधराश्रम की स्थापना का उल्लेख है, जिसे चन्दन पर्वत पर बनवाया गया था, इस आश्रम के लिए प्रदत्त रत्न, कांचन, रूप्य, हाथी, घोड़े, गौ, भैंस, दास, दासी, उद्यान, भूमि आदि का उल्लेख कर यशोवर्मा ने यह आदेश उत्कीर्ण कराया था, कि "ये सब वस्तुएँ जो यशोवर्मा के द्वारा आश्रम के लिए प्रदान की गई है, उन्हें अन्य कोई तो क्या राजा भी आश्रम से वापस नहीं ले सकेगा। आश्रम की राजकुटि के भीतरी भाग में केवल राजा, ब्राह्मण और राजपुत्र ही अपने आभूषणों को उतारे बिना प्रविष्ट हो सकेंगे। इनसे भिन्न जो सर्वसाधारण लोग हैं। वे बहुत सादे परिधान में और आदि के बिना ही वहाँ जा सकेंगे। वे न कानों में कोई आभूषण पहन सकेंगे, न कोई सुवर्णनिर्मित आभूषण पहनकर भीतर जा सकेंगे और भीतर जाकर वे भोजन एवं सुपारी नहीं खा सकेंगे। वहाँ कोई झगड़ा नहीं किया जा सकेगा। दुष्ट चरित्र वाले यति (साधु) वहाँ नहीं रह सकेंगे। राजा के अतिरिक्त जो कोई भी आश्रम के सामने से गुजरे उसे रथ से उतर जाना होगा और बिना छाता लगाये पैदल चलना होगा जो तापसोत्तम (उत्तम तपस्वी) आश्रम का कुलपति नियुक्त किया जाए, उसका यह कर्तव्य होगा कि जो राजपुत्र, मंत्री, सेनाध्यक्ष, ब्राह्मण और वैष्णव तपस्वी व अन्य श्रेष्ठ पुरुष अतिथि के रूप में आश्रम में आए अन्न, पान, सुपारी आदि से उनका यथोचित आतिथ्य करें और उनके विश्राम की समुचित व्यवस्था करें। जिस प्रकार का एक आश्रम राजा यशोवर्मा ने चन्दन पर्वत पर गणेश देवता को अर्पित कर दिया

कराया था, वैसे ही आश्रम अन्य देवताओं को अर्पित करके भी स्थापित कराये गये थे। उनके लिए भी इसी प्रकार के आदेश जारी किये गये थे, जिनकी ग्यारह प्रतियाँ विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध हुई हैं। भोले अभिलेख के अनुसार राजा यशोवर्मा द्वारा स्थापित आश्रमों की संख्या सौ थी। इन आश्रमों की स्थापना प्रधानतया शैव और वैष्णव मंदिरों के साथ की गयी थी, जिसके कारण ये 'शैव आश्रम' या वैष्णव आश्रम कहाते थे। इन आश्रमों में जो अध्यापक और विद्यार्थी विद्या पढ़ाने या पढ़ने में व्याप्त रहते थे, उनके भोजन आदि का व्यय राजा एवं अन्य सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा किया जाता था। राजा जय वर्मा सप्तम के भोमपुर अभिलेख में यह लिखा है, कि मंदिर के सारे अध्यापकों तथा उनके अन्तेवासियों के लिए कितनी-कितनी भोजन सामग्री राजा की ओर से प्रतिवर्ष प्रदान की जाती थी। भोजन सामग्री तथा आदि वस्त्र आदि के किसानों तथा तन्तुवायों आदि से लिए जाने का उल्लेख भी इस अभिलेख में विद्यमान है।

आश्रमों में जो आचार्य, अध्यापक, ब्रह्मचारी व अन्य विद्यार्थी निवास करते थे, उन्हें किसे हिसाब से भोजन सामग्री एवं अन्य आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की जाती थी, इसका उल्लेख भी यशोवर्मा के अभिलेखों में किया गया है। उनके अनुसार आचार्यों और ब्रह्मचारियों के लिए प्रतिदिन प्रति व्यक्ति चार दन्तकाष्ठ (दातौन) आठ सुपारी, साठ ताम्बूल पत्र, आधा आढ़क चावल, एक मुट्ठी दीपिका (पाचक धान्य) और एक गड्डा ईंधन देने की व्यवस्था की गयी थी। बड़े और बाले आश्रमों में जहाँ बहुत से अध्यापक तथा विद्यार्थी रहते वहाँ साथ ही कतिपय लेखक तथा पुस्तकरक्षक आदि कर्मचारियों को भी विशिष्ट कार्यों के लिए सम्पादन के लिए रखा जाता था। आश्रम के कुलपति की सेवा के लिए जिन व्यक्तियों की नियुक्ति की जाती थी, उनकी संख्या बहुत अधिक थी। उसके लिए नौ दास, एक दासी, एक क्षुरक (नाई) तथा तीन कृषिबल दासों (खेतिहरों) की व्यवस्था की गयी थी। इसी प्रकार से अन्य अध्यापकों आचार्यों आदि के लिए भी सेवकों के रखे जाने का विधान था।

आश्रम में पठन-पाठन का कार्य होता था, अतः वहाँ मसीपत्रों (दवातों) और स्याही की भी आवश्यकता पड़ती थी। तेप प्रनम अभिलेख में इनके दिये जाने का भी उल्लेख है। पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ तैयार करने का कार्य भी इन आश्रमों में सम्पन्न होता था और हस्तलिखित ग्रंथों को बहुत बहुमूल्य माना जाता था। राजा सूर्यवर्मा द्वितीय के बन्ध्यत अभिलेख में एक आश्रम को दिये गये दानों का उल्लेख है जिनमें सब शास्त्रों की हस्तलिखित प्रतियाँ भी थी। राजाओं के अतिरिक्त अन्य सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा स्थापित किये जाने वाले आश्रमों में एक उल्लेखनीय है, जिसकी सूचना जयवर्मा पंचम के समय के प्रसत कोम्फस अभिलेख से मिलती है। जयवर्मा पंचम की बहन इन्द्रलक्ष्मी थी, जिसका विवाह दिवाकर भट्ट नामक ब्राह्मण के साथ हुआ था। यह दिवाकर भट्ट भारत के उत्तरप्रदेश के निवासी थे, "जहाँ सुन्दर कालिन्दी (यमुना) नदी बहती है, जहाँ कृष्ण ने कालियनाग का मर्दन किया था और छत्तीस हजार ब्राह्मणों द्वारा गाये जाने वाले ऋक्, यजु, और सामवेद के मंत्रों की ध्वनि से जहाँ कि भूमि प्रतिध्वनित होती रहती थी।" सम्भवतः दिवाकर भट्ट मथुरा से कम्बुज देश आये थे और उनकी विद्या तथा ज्ञान से प्रभावित होकर राजा राजेन्द्रवर्मा ने अपनी पुत्री इन्द्रलक्ष्मी का विवाह उनके साथ कर दिया था। इन दिवाकर भट्ट ने कम्बुज देश के मधुवन नामक स्थान पर विष्णुगोप विष्णुमहेश्वर लिंग को द्विजेन्द्र के नाम से और विष्णु की एक मूर्ति को प्रतिष्ठापित किया था, और साथ ही द्विजेन्द्रपुर में एक आश्रम की भी स्थापना की थी।

ये आश्रम विद्या के केन्द्र होने के साथ-साथ धर्म के भी केन्द्र हुआ करते थे और धर्मशास्त्रों का इनमें विशेष रूप से पठन-पाठन हुआ करता था। राजा जयवर्मा पंचम के बंतेस्राई अभिलेख में आश्रम के कुलपति को यह आदेश दिया गया है, कि वह रा० आश्रम वासियों के भोजनादि और अतिथ्य की व्यवस्था करें और अध्यापक आलस्य का परित्याग कर निरन्तर

कहारक (वेदपाल) में तवार रहतीं (आश्रमों में किसका कितना सम्मान किया जाये और नियमों का उल्लंघन करने पर किसे क्या दण्ड दिया जाये, इस विषय में भी सब व्यवस्थाएँ अभिलेखों में विद्यमान हैं। ये दंड राजपुत्रों राजा के संबंधियों तथा मंत्रियों के लिए बहुत अधिक हैं और व्यापारियों तथा सर्वसाधारण लोगों के लिए अपेक्षतया कम हैं।

Scanned with CamScanner